

वैश्विक व्यापार में संतुलन की दरकार

वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने रखा विकास-केंद्रित एजेंडा
एमसी14 में भारत ने उठाई बराबरी की आवाज



याउंडे (कैमरून), 27 मार्च. वैश्विक व्यापार व्यवस्था में संतुलन और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए भारत ने एक बार फिर अपनी मजबूत आवाज उठाई है। पीयूष गोयल ने कैमरून की राजधानी याउंडे में आयोजित डब्ल्यूटीओ 14वां मंत्रिस्तरीय सम्मेलन के दौरान स्पष्ट किया कि विश्व व्यापार संगठन में सुधार प्रादर्शों, समावेशी और सदस्य-आधारित प्रक्रिया से ही होने चाहिए। उन्होंने इस बात पर जोर दिया

कि वैश्विक व्यापार नियमों का मूल उद्देश्य विकास होना चाहिए, खासकर विकासशील और अल्पविकसित देशों के हितों को ध्यान में रखते हुए, भारत ने बिना भेदभाव, समानता और सर्वसम्मति जैसे सिद्धांतों को बनाए रखने की स्थिति स्पष्ट की, बल्कि कई देशों के साथ द्विपक्षीय व्यापार संबंधों को भी रेखांकित किया। इस सम्मेलन के दौरान भारत ने न केवल बहुपक्षीय याउंडे में आयोजित डब्ल्यूटीओ 14वां मंत्रिस्तरीय सम्मेलन के दौरान भारत ने वैश्विक व्यापार व्यवस्था में संतुलन, पारदर्शिता और समावेशिता की जोरदार वकालत की।

केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने स्पष्ट किया कि विश्व व्यापार संगठन में सुधार की प्रक्रिया सदस्य-चालित होनी चाहिए और इसमें विकास को केंद्र में रखा जाना चाहिए, उन्होंने कहा कि वैश्विक व्यापार प्रणाली में निष्पक्षता बनाए रखने के लिए बिना भेदभाव और सर्वसम्मति आधारित निर्णय जैसे सिद्धांत बेहद महत्वपूर्ण हैं।

भारत ने सम्मेलन में विकास-केंद्रित एजेंडा पर विशेष जोर दिया, इसमें खाद्य सुरक्षा के लिए सार्वजनिक स्टॉकहोल्डिंग पर स्थायी समाधान, विकासशील और अल्पविकसित देशों के लिए विशेष एवं विभेदक व्यवहार प्रावधानों को प्रभावी बनाना और डब्ल्यूटीओ के विवाद निपटान तंत्र को पूरी तरह बहाल करना शामिल है। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में विभिन्न देशों के व्यापार मंत्रियों और वरिष्ठ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस दौरान मस्टय पालन सॉल्यूटी समझौते के लागू होने पर भी संतोष व्यक्त किया गया।

रुपया 34 पैसे टूटकर 94.30 रुपये प्रति डॉलर के रिकॉर्ड निचले स्तर पर

मुंबई, 27 मार्च. अंतरबैंकिंग मुद्रा बाजार में रुपया शुक्रवार को शुरुआती कारोबार में 34 पैसे टूटकर 94.30 रुपये प्रति डॉलर पर आ गया। बीच कारोबार में पहली बार भारतीय मुद्रा इस स्तर तक कमजोर हुई है। पिछले कारोबारी दिवस पर 25 मार्च को यह 20 पैसे की गिरावट में 93.96 रुपये प्रति डॉलर पर बंद हुई थी जो इसका अब तक का सबसे कमजोर बंद भाव है। रुपया आज 22.75 पैसे की गिरावट में 94.1875 रुपये प्रति डॉलर पर खुला और 94.30 रुपये प्रति डॉलर तक टूट गया। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में वृद्धि और विदेशी संस्थागत निवेशकों के भारतीय पूंजी बाजार में इस महीने लगातार बिकवाली रहने से भारतीय मुद्रा दबाव में है।

देश में एलपीजी की कोई कमी नहीं : सरकार

रोज 50 लाख सिलेंडर डिलीवरी देश में स्थिति सामान्य



नई दिल्ली, 27 मार्च. देश में एलपीजी की कमी को लेकर फैल रही अफवाहों के बीच सरकार ने स्थिति पूरी तरह स्पष्ट कर दी है। पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने कहा है कि देश में एलपीजी की आपूर्ति पूरी तरह सुरक्षित और नियंत्रण में है तथा कहीं भी किसी प्रकार की कमी नहीं है। मंत्रालय के अनुसार, हाल ही में लागू किए गए नियंत्रण उपायों के बाद घरेलू रिफाइनेरी उत्पादन में 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इससे दैनिक उत्पादन बढ़कर 50 टोएमटी तक पहुंच गया है, जो देश की कुल आवश्यकता का 60

प्रतिशत से अधिक है। वही 100 प्रतिशत रिफाइनेरी का काम हो रहा है। शोध जरूरत आयात के माध्यम से पूरी की जा रही है, जिससे आपूर्ति संतुलित बनी हुई है। सरकार ने यह भी बताया कि पर्याप्त मात्रा में एलपीजी कार्गो

हाल के दिनों में घबराहट के कारण मांग बढ़कर 89 लाख सिलेंडर तक पहुंच गई थी, लेकिन अब स्थिति सामान्य हो गई है और मांग फिर से संतुलित स्तर पर आ गई है। जमाखोरी और कालाबाजारी को रोकने के लिए सरकार ने वाणिज्यिक सिलेंडरों का आबंटन बढ़ाने जैसे कदम भी उठाए हैं। इसके साथ ही, पाइपलाइन द्वारा प्राकृतिक गैस को बढ़ावा देने की नीति भी जारी है, जिसे सस्ता, स्वच्छ और सुरक्षित ईंधन माना जाता है।

आयात निर्भरता घटाने को तेज होगी खनिज खोज



महत्वपूर्ण खनिज खोज पर सरकार का बड़ा फोकस
लिथियम सहित खनिज खोज में तेजी लाएगी सरकार

नई दिल्ली 27 मार्च. केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ जितेन्द्र सिंह ने कहा है कि दुर्लभ और महत्वपूर्ण खनिजों के आयात पर निर्भरता कम करने के लिए भारत महत्वपूर्ण खनिजों की खोज को बढ़ावा देगा और एक मजबूत घरेलू मूल्य श्रृंखला निर्मित करने की दिशा में आगे बढ़ेगा।

अधिकारियों, सीएसआईआर-खनिज एवं पदार्थ प्रौद्योगिकी संस्थान (सी एस आई आर डब्ल्यूआई एम एम टी) के निदेशक, परमाणु खनिज महानिदेशालय के निदेशक, परमाणु ऊर्जा विभाग के प्रतिनिधियों, अन्वेषण एजेंसियों के अधिकारियों तथा राजस्थान, तेलंगाना और महाराष्ट्र सहित विभिन्न राज्य सरकारों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। डॉ सिंह ने कहा कि खनिज क्षेत्र की उन्नति में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद-आईएमएमटी तथा परमाणु ऊर्जा विभाग जैसे वैज्ञानिक संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। मंत्री ने कहा कि भारत महत्वपूर्ण खनिजों का पता लगाने की गति बढ़ाने, स्टार्टअप-आधारित खनिज पारिस्थितिकी विकसित करने तथा आयात निर्भरता को कम करने के लिए मजबूत घरेलू मूल्य श्रृंखलाओं के निर्माण की प्रक्रिया शुरू कर चुका है।

डॉ. सिंह ने राष्ट्रीय खनिज अन्वेषण एवं विकास न्यास (एनएमईटी) की शासी निकाय की बैठक में महत्वपूर्ण खनिजों की खोज की प्रगति की समीक्षा की तथा इस काम में स्टार्टअप की भागीदारी तथा मजबूत घरेलू आपूर्ति श्रृंखलाओं के निर्माण पर बल दिया। बैठक की सह-अध्यक्षता कोयला एवं खान मंत्री तथा एनएमईटी की शासी निकाय के अध्यक्ष जी. किशन रेड्डी ने की। इसमें खान मंत्रालय के वरिष्ठ

उन्होंने कहा कि भारत को खनिज एवं महत्वपूर्ण खनिज क्षेत्र में भारतीय कंपनियों और स्टार्टअप के प्रवेश हेतु अनुकूल वातावरण तैयार करना होगा। स्टार्टअप को संस्थागत समर्थन, निर्धारित प्रोत्साहन तथा हैंडहोल्डिंग तंत्र उपलब्ध कराकर खनिज प्रौद्योगिकियों और अन्वेषण विधियों में नवाचार को बढ़ावा दिया जा सकता है। मंत्री ने कहा कि खनिजों के अन्वेषण और दोहन क्षेत्र के दीर्घकालिक विकास के लिए निजी अन्वेषण एजेंसियों की क्षमता निर्माण अत्यंत आवश्यक है।

समाचार विशेष

झारखंड में गठबंधन का क्या होगा?

झामुमो को राजद ने बिहार में टुकराया, कांग्रेस ने असम में बनाई दूरी

रांची. झारखंड की सत्ताधारी पार्टी झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) की राजनीति इन दिनों बहुस्तरीय दबाव और रणनीतिक पुनर्संरचना के दौर से गुजर रही है। पहले बिहार और अब असम में सहयोगी दलों के साथ तालमेल नहीं बनने से पार्टी ने अलग राह चुनने का संकेत दिया है।



इसका असर भविष्य में झारखंड के सत्ता समीकरण पर भी पड़ सकता है। असम विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के साथ सीट बंटवारे पर सहमति नहीं बनने के बाद झामुमो ने अकेले चुनाव लड़ने का फैसला किया है। एकला चलो का यह

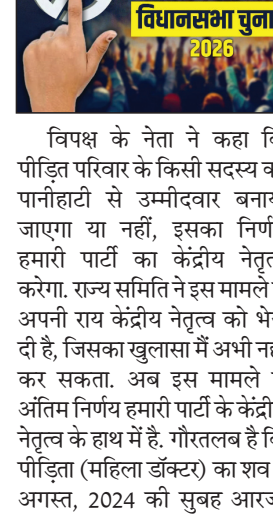
फैसला सिर्फ चुनावी रणनीति नहीं, बल्कि झामुमो की स्वतंत्र पहचान की राजनीति को भी दर्शाता है। हालांकि असम में यह प्रयोग झामुमो के लिए शुरुआत जरूर है, लेकिन इससे पार्टी अपनी संगठनात्मक ताकत और आदिवासी वोट बैंक पर असर को नए तरीके से परखना चाहती है।

हाल ही में संघर्ष बिहार बिहार विधानसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के साथ तालमेल को लेकर भी झामुमो को अपेक्षित सम्मान नहीं मिला। सीटों के बंटवारे और राजनीतिक प्राथमिकता को लेकर मतभेद उभरकर सामने आए, जिसमें उन्होंने कटाक्ष भी किया।

दीदी के खिलाफ बीजेपी का भावुक दांव

आरजी कर कांड पीड़िता के माता-पिता की राजनीति में एंट्री

कोलकाता. पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता (एलओपी) सुवंदु अधिकारी ने पृष्ठ की कि आरजी कर कांड पीड़िता के माता-पिता ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की बुनियादी सदस्यता ले ली है। हालांकि, उन्होंने आगे कहा कि पार्टी नेतृत्व ने अभी तक यह तय नहीं किया है कि उत्तर 24 परगना जिले के पानीहाटी विधानसभा क्षेत्र से उनमें से किसी को पार्टी का उम्मीदवार बनाया जाएगा या नहीं। भाजपा ने अगले महीने होने वाले पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनावों के लिए उम्मीदवारों की दो सूचियां प्रकाशित की हैं, लेकिन उसने अभी तक पानीहाटी से अपने उम्मीदवार की घोषणा नहीं की है।



कर परिसर से बरामद किया गया था। कोलकाता पुलिस ने मामले की जांच शुरू की और इस मामले में एकमात्र दोषी परिवार रॉय को गिरफ्तार किया, जो शहर पुलिस के पूर्व नागरिक स्वयंसेवक थे। बाद में, कलकत्ता हाईकोर्ट के आदेश के बाद केंद्रीय जांच ब्यूरो ने मामले की जांच का जिम्मा संभाला और केंद्रीय एजेंसी ने भी संजय रॉय को दुष्कर्मी और हत्या के अपराध में एकमात्र आरोपी के रूप में पहचाना। बाद में, कोलकाता की निचली अदालत ने रॉय को इस अपराध में एकमात्र दोषी मानते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई। इसके बाद, सीबीआई ने कलकत्ता हाईकोर्ट में इस आदेश को चुनौती दी।

भाजपा के प्रचार से दूर मुस्लिम नेता

कोलकाता. पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी ने मुस्लिम नेताओं को प्रचार से दूर रखा है। वैसे बंगाल में भाजपा के पास ज्यादा मुस्लिम नेता नहीं हैं और जो हैं उनका भी कद बढ़ा नहीं है। फिर भी मुस्लिम बहुल इलाकों में भाजपा ने मुस्लिम नेता खड़े किए हैं। इस बार उन सबको प्रचार से दूर रखा जा रहा है।

हाजपा के जानकार नेताओं का कहना है कि पार्टी इस बार पूरी तरह से ध्रुवीकरण के एजेंडे पर चुनाव लड़ रही है। तभी ईद के दिन जब मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने अपने भतीजे अभिषेक बनर्जी के साथ ईद की नमाज में हिस्सा लिया तो शुभेंदु अधिकारी कालीघाट मंदिर गए और मंदिर से निकल कर बयान दिया कि माता ने उनको आशीर्वाद दिया है।

भाजपा के जानकार नेताओं का कहना

है कि पार्टी 294 में से एक भी सीट अजबान के तौर पर भी किसी मुस्लिम को टिकट नहीं देगी। उसे राज्य के 70 फीसदी हिंदुओं को मौसजे देना है। भाजपा दो लोकसभा और दो विधानसभा चुनावों से देख रही है कि जितना हिंदू ध्रुवीकरण हो रहा है उससे वह चुनाव नहीं जीत सकती है। अभी सी में से 60 हिंदू भाजपा को वोट दे रहा है। उसे कम से कम सी में WEST BENGAL में 70 हिंदू वोट की जरूरत है। इतने बड़े ध्रुवीकरण के लिए भाजपा को जो कुछ भी करना होगा वह करेगा। ध्यान रहे चुनाव की घोषणा से ठीक पहले वाली रैली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खुद एजेंडा सेट कर दिया। उन्होंने कहा कि बंगाल में हालात ऐसे ही रहे तो हिंदू अल्पसंख्यक हो जाएंगे। आगे भाजपा के प्रचार को लाइन यही रहने वाली है। उसे बांग्लाभाषी हिंदुओं के मन में यह भाव पैदा करना है कि मुस्लिम आबादी और घुसपैठ बढ़ने से उसके बच्चों का भविष्य खराब हो जाएगा।

विशेष पशुपति पारस और साधु पासवान से मिले चिराग, पैर छूकर लिया आशीर्वाद

क्या खत्म होगी चाचा-भतीजे की दूरी?

पटना. बिहार की राजनीति में लंबे समय से चली आ रही तलखी के बीच एक भावान्त्वक तस्वीर सामने आई, जब चिराग पासवान एक पारिवारिक कार्यक्रम में अपने चाचा पशुपति कुमार पासवान और जीजा साधु पासवान से मिले। इस मुलाकात ने सियासी गलियारों में नई चर्चाओं को जन्म दे दिया है। कार्यक्रम के दौरान चिराग पासवान ने अपने चाचा और जीजा के पैर छूकर आशीर्वाद लिया। यह दृश्य काफी भावुक रहा और वहां

मौजूद लोगों ने इसे पारिवारिक रिश्तों की मजबूती के रूप में देखा। लंबे समय बाद इस तरह की मुलाकात ने सभी का ध्यान खींचा। राजनीतिक मतभेदों के चलते परिवार में दूरी बनी हुई थी, लेकिन इस मुलाकात ने रिश्तों में नरमी के संकेत दिए हैं। हालांकि, यह पूरी तरह से



कार्यक्रम में दिखी एकजुटता

पारिवारिक कार्यक्रम में सभी सदस्य एक साथ नजर आए, जिससे एकजुटता की तस्वीर सामने आई। इस दौरान माहोल पूरी तरह पारिवारिक और सौहार्दपूर्ण रहा, जिसने सियासी कड़वाहट को पीछे छोड़ने का संदेश दिया। ज्ञात हो कि पिछले कुछ वर्षों में चिराग पासवान और पशुपति पारस के बीच राजनीतिक मतभेद खुलकर सामने आए थे। इसी कारण परिवार और पार्टी दोनों में खींचतान की स्थिति बनी रही। इस मुलाकात के राजनीतिक मायने क्या होंगे, यह आने वाला समय ही बताएगा। फिलहाल, इस घटना ने यह जरूर दिखा दिया है कि राजनीति से इतर पारिवारिक रिश्ते अब भी मजबूत हैं और संवाद की गुंजाइश बनी हुई है।

राजनीतिक मेल-मिलाप है या सिर्फ पारिवारिक अवसर, इस पर अभी कुछ स्पष्ट नहीं कहा जा सकता। इस मुलाकात के बाद समर्थकों और राजनीतिक विश्लेषकों के बीच चर्चाएं तेज हो गई हैं। लोग इसे आने वाले समय में किसी बड़े राजनीतिक बदलाव या समीकरण के संकेत के रूप में भी देख रहे हैं।